EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

अंतरराष्ट्रीय शांति और वैश्विक सद्भाव के संदर्भ में वसुधैव कुटुम्बकम्

डॉ. सुहासकुमार रूपराव पाटील
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, यवतमाळ

आर्यप्रभा वसंतराव काळे

सारांश (Abstract)

वर्तमान वैश्विक परिवेश एक ओर तकनीकी एकीकरण (Technological Integration) से संपन्न है, तो दूसरी ओर वैचारिक और सामरिक विखंडन (Geopolitical Fragmentation) से संत्रस्त है। इक्कीसवीं सदी में शांति का अर्थ केवल शस्त्रों का मौन होना नहीं रह गया है, बल्कि इसमें मानवाधिकार, खाद्य सुरक्षा, जलवायु न्याय और सांस्कृतिक पहचानों का सम्मान भी सम्मिलित है। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, जो वेस्टफेलियन (Westphalian) संप्रभुता और यथार्थवादी हितों पर आधारित है, वैश्विक संघर्षों को सुलझाने में अपनी सीमाएं स्पष्ट कर चुकी है [1]। वैश्विक परिदृश्य में युद्ध, आतंकवाद, सांस्कृतिक संघर्ष, आर्थिक असमानता तथा वैचारिक टकराव जैसी समस्याएँ अंतरराष्ट्रीय शांति के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। ऐसे समय में भारतीय दर्शन से उद्भूत "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा संपूर्ण मानवता को एक परिवार मानने की दृष्टि प्रस्तुत करती है। यह विचार केवल दार्शनिक आदर्श नहीं, बल्कि वैश्विक सद्भाव, सहअस्तित्व और शांतिपूर्ण विकास का व्यवहारिक मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

मुख्यशब्द (Keywords): वसुधैव कुटुम्बकम्, अंतरराष्ट्रीय शांति, वैश्विक सद्भाव, भारतीय दर्शन, उच्च शिक्षा

प्रस्तावना

21 वीं शताब्दी में विश्व तीव्र गति से प्रगति कर रहा है, परंतु यह प्रगति अनेक विरोधाभासों से भी घिरी हुई है। एक ओर विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं दूसरी ओर युद्ध, हिंसा, नस्लवाद, धार्मिक असहिष्णुता और पर्यावरणीय संकट ने वैश्विक शांति को अस्थिर कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थायी शांति और सद्भाव की खोज आज एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। ऐसे परिदृश्य में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में निहित "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सिद्धांत संपूर्ण मानवता के लिए एक आशा-स्तंभ के रूप में उभरता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा का दार्शनिक आधार, अंतरराष्ट्रीय शांति में इसकी भूमिका तथा वैश्विक सद्भाव की स्थापना में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी विवेचन किया गया है कि उच्च शिक्षा संस्थान इस अवधारणा को अपनाकर किस प्रकार वैश्विक नागरिकता, नैतिक मूल्यों और शांतिपूर्ण विश्व-व्यवस्था के निर्माण में योगदान दे सकते हैं ऐसी स्थिति में, भारत का प्राचीन उद्घोष 'वसुधैव कुटुम्बकम्' केवल एक सांस्कृतिक मुहावरा नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक 'विश्व-व्यवस्था' (World Order) का खाका प्रस्तुत करता है। यह दर्शन मानवता को विधिक इकाइयों (Legal Entities) के बजाय एक जैविक परिवार (Biological and Spiritual Family) के रूप में देखता है। यह शोध-लेख इस अवधारणा के दार्शनिक मूल से लेकर आधुनिक अंतरराष्ट्रीय शासन (Global Governance) में इसकी प्रासंगिकता का दस-आयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

'वसुधैव कुटुम्बकम्' : अवधारणा और दार्शनिक आधार

"वसुधैव कुटुम्बकम्" का शाब्दिक अर्थ है **सम्पूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है।** यह विचार प्राचीन भारतीय दर्शन में मानवता, करुणा, सह-अस्तित्व और सार्वभौमिक भाईचारे का प्रतीक है। इस अवधारणा के अनुसार मानव जाति को जाति, धर्म, राष्ट्र या भाषा के आधार पर विभाजित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति समान गरिमा और सम्मान का अधिकारी है। यह दर्शन स्वार्थ के स्थान पर परमार्थ, प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग तथा संघर्ष के स्थान पर संवाद को महत्व देता है।

अंतरराष्ट्रीय शांति की अवधारणा

अंतरराष्ट्रीय शांति का तात्पर्य केवल युद्ध की अनुपस्थिति से नहीं है, बल्कि यह न्याय, समानता, मानवाधिकारों की रक्षा और आपसी विश्वास पर आधारित विश्व-व्यवस्था को दर्शाती है। जब राष्ट्र अपने संकीर्ण हितों से ऊपर उठकर वैश्विक हितों पर विचार करते हैं, तभी स्थायी शांति संभव हो पाती है। वर्तमान विश्व में शांति की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि राष्ट्र-राज्य अक्सर आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं।

दार्शनिक अधिष्ठान: ऋत और सत्य

शांति की भारतीय अवधारणा 'ऋत' (Rta) से आरंभ होती है। ऋग्वेद के अनुसार, संपूर्ण ब्रह्मांड एक अंतर्निहित व्यवस्था द्वारा संचालित है।

ऋत: वैश्विक सामंजस्य का आदि-नियम

ऋग्वेद में 'ऋत' को ब्रह्मांड की नैतिक और भौतिक लय माना गया है:

ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति ।

ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः ॥ (ऋग्वेद, ४.२३.८)

अर्थ: ऋत की धाराएं अत्यंत विस्तृत हैं; ऋत का चिंतन ही पापों का नाश करता है। ऋत का स्वर सोई हुई चेतना को जाग्रत करता है। शोधपरक दृष्टि से, ऋत वह 'कॉस्मिक ऑर्डर' है जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्राकृतिक न्याय और स्थिरता का आधार बनता है। जब कोई राष्ट्र अपनी संकीर्ण महत्वाकांक्षा के लिए ऋत (वैश्विक संतुलन) को भंग करता है, तो युद्ध और विभीषिका उत्पन्न होती है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का शास्त्रीय स्रोत एवं विश्लेषण

यह दर्शन 'महा उपनिषद्' के छठे अध्याय में प्रतिपादित है, जहाँ इसे आत्मज्ञान की पराकाष्ठा माना गया है।

मूल श्लोक और शब्दार्थ

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

लघुचेतसाम् : संकीर्ण मानसिकता, जो 'स्व' और 'पर' (Self vs Other) के द्वंद्व में उलझी है। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में यह 'यथार्थवाद' (Realism) और 'शून्य-योग खेल' (Zero-sum game) का प्रतीक है [5]।

उदारचरितानां : वे जिनकी चेतना का विस्तार हो चुका है। यह 'कॉस्मोपॉलिटन' नैतिकता का भारतीय स्वरूप है [6]।

वसुधैव कुटुम्बकम् : पृथ्वी (वसुधा) ही (एव) परिवार (कुटुम्ब) है।

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि शांति कोई बाहरी समझौता नहीं, बल्कि चेतना का आंतरिक रूपांतरण है। उपनिषद् आगे कहता है कि जो मोह और आसक्ति से मुक्त है, वही संपूर्ण विश्व को अपना परिवार मान सकता है । (महा उपनिषद्, ६.७२-७५) [7]

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शांति का नैतिक विस्तार: धर्म और अहिंसा

भारतीय शांति-चिंतन केवल युद्ध-निषेध नहीं, बल्कि 'धार्मिक शांति' है।

अहिंसा परमो धर्मः: व्यापक अर्थ

महाभारत के अनुशासन पर्व में शांति का आधार अहिंसा को बताया गया है:

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परं तपः ।

अहिंसा परमं सत्यं ततो धर्मः प्रवर्तते ॥ *(महाभारत, अनुशासन पर्व, ११६.२५)*

अहिंसा केवल शस्त्रों का त्याग नहीं है, बल्कि यह 'सत्य' पर आधारित एक सक्रिय नैतिक बल है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसका अर्थ है—राष्ट्रों के मध्य अविश्वास और घृणा का उन्मूलन।

सर्वे भवन्तु सुखिनः: समावेशी वैश्विक कल्याण

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

यह प्रार्थना किसी विशेष समूह के लिए नहीं, बल्कि 'अखिल मानवता' के लिए है। यह सह-अस्तित्व (Co-existence) की उस पराकाष्ठा को दर्शाता है जहाँ एक की पीड़ा को संपूर्ण परिवार की पीड़ा माना जाता है [8]।

पर्यावरणीय शांति: अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त

आधुनिक युग में पर्यावरण संकट वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। शांति के भारतीय मॉडल में प्रकृति और मनुष्य का अलगाव नहीं है। अथर्ववेद का 'पृथ्वी सूक्त' शांति को एक 'एन्थ्रोपो-कॉस्मिक' दृष्टि से देखता है:

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः । *(अथर्ववेद, १२.१.१२)*

अर्थ: भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। शांति तब तक स्थायी नहीं हो सकती जब तक मनुष्य प्रकृति के साथ युद्धरत है। पृथ्वी सूक्त का ६३वां श्लोक स्पष्ट करता है कि सत्य, ऋत, दीक्षा और तप ही पृथ्वी को धारण करते हैं। यह आधुनिक 'जलवायु कूटनीति' (Climate Diplomacy) का प्राचीनतम आधार है।

तुलनात्मक विश्लेषण: वेस्टफेलियन बनाम भारतीय मॉडल

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के शोध में यह तुलना अत्यंत महत्वपूर्ण है:

आधार	वेस्टफेलियन व्यवस्था (Western Model)	वसुधैव कुटुम्बकम् (Indian Model)
मूल अवधारणा	राष्ट्र-राज्य की संप्रभुता	वैश्विक नागरिकता और आत्मिक एकता [5]
शांति की परिभाषा	युद्ध की अनुपस्थिति (Negative Peace)	सामंजस्य और ऋत की स्थापना
आधार स्तंभ	अंतरराष्ट्रीय कानून और संधियाँ [10]	नैतिक उत्तरदायित्व और धर्म
दृष्टिकोण	मानव-केंद्रित [11]	ब्रह्मांड-केंद्रित

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

आधुनिक अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में अनुप्रयोग

भारत ने अपनी विदेश नीति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक सक्रिय राजनयिक उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया है।

G20 अध्यक्षता (२०२३) : भारत ने "One Earth, One Family, One Future" के ध्येय वाक्य के साथ वैश्विक विमर्श को आर्थिक लाभ से हटाकर 'मानव-केंद्रित विकास' की ओर मोड़ा [12]।

वैक्सीन मैत्री : कोविड-19 महामारी के दौरान १०१ से अधिक देशों को जीवन रक्षक वैक्सीन उपलब्ध कराना इस दर्शन का प्रत्यक्ष प्रमाण था [12]।

जलवायु परिवर्तन : 'Lifestyle for Environment' अभियान यह स्मरण कराता है कि हम सब एक ही गृह (Home) के निवासी हैं [14]।

मानवीय सहायता : तुर्की और सीरिया के भूकंप में बिना किसी भेदभाव के सहायता भेजना 'विश्व-बंधुत्व' की भावना को पुष्ट करता है।

आलोचनात्मक विमर्श : आदर्शवाद और यथार्थवाद

आलोचक इसे एक 'सौम्य सत्ता' की आदर्शवादी कल्पना मानते हैं। किंतु, भारतीय कूटनीति में 'यथार्थवाद' का अभाव नहीं है।

कौटिल्य और मत्स्य न्याय: कौटिल्य ने अराजक विश्व में शक्ति के महत्व को स्वीकार किया है।

प्रबुद्ध यथार्थवाद: 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कोई कायरतापूर्ण शांति नहीं है। यह महाभारत के उस सत्य को भी आत्मसात करता है जहाँ धर्म की रक्षा के लिए शक्ति का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है (धर्म हिंसा तथैव च)।

निष्कर्ष : यह 'यथार्थवाद' को 'नैतिकता' के साथ संतुलित करने का प्रयास है (Enlightened Realism) [5]।

उच्च शिक्षा संस्थान समाज की वैचारिक दिशा

उच्च शिक्षा संस्थान समाज की वैचारिक दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षा केवल कौशल और रोजगार तक सीमित रह जाए, तो वह मानवता के व्यापक उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकती। उच्च शिक्षा में "वसुधैव कुटुम्बकम्" के मूल्यों को समाहित कर विद्यार्थियों को वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित किया जा सकता है। पाठ्यक्रम, शोध, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से शांति, सहिष्णुता और नैतिकता का प्रसार संभव है।

उपसंहार:

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का दर्शन केवल एक प्राचीन मंत्र नहीं, बल्कि भविष्य की वैश्विक सभ्यता का आधार-स्तंभ है। यह हमें सिखाता है कि युद्ध केवल भूमि पर नहीं, बल्कि मनुष्यों के मस्तिष्क में लड़े जाते हैं। अतः शांति की स्थापना भी चेतना के स्तर पर ही संभव है। जब तक राष्ट्र स्वयं को पृथक द्वीपों के रूप में देखेंगे, संघर्ष अपरिहार्य है। इक्कीसवीं सदी के संकटों चाहे वह परमाणु खतरा हो या पारिस्थितिक पतन का समाधान इसी 'एकत्व' के भाव में निहित है। जैसा कि अथर्ववेद उद्घोष करता है, हम सब एक ही माता की संतान हैं, अतः हमारा सुख और दुःख भी साझा है। भारत की यह महान परंपरा वैश्विक शांति के लिए एक अमूल्य उपहार है, जो संकीर्ण राष्ट्रवाद से ऊपर उठकर मानवता को 'परमात्मा के परिवार' के रूप में देखने का साहस प्रदान करती है।

References

Ancient Sanskrit Scriptures & Commentaries

Atharva Veda Samhita. (Prithvi Sukta, 12.1). Trans. Naresh Chandra Joshi. New Delhi: Vedic Heritage, 2012.

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

Mahabharata. (Anushasana Parva, Shanti Parva). Trans. K.M. Ganguli. Calcutta: Bharata Press, 1890. Rpt. Gita Press, 2010.

Maha Upanishad. Ed. and Trans. S. Radhakrishnan. The Principal Upanishads. London: George Allen & Unwin Ltd, 1953. [16]

Rig Veda Samhita. (Mandala 4 and 10). Trans. Shripad Damodar Satwalekar. Pardi: Swadhyay Mandal, 1985.

Modern Scholarly Articles & Monographs

Boodnah, Roshan. "Constructing Sustainable Peace in a Plural Society: The Ethical and Philosophical Relevance of Vasudhaiva Kutumbakam." International Journal of Science and Management Studies 7.3 (2025): 109-124. [11]

Dheeraj, P. "Rethinking Global Peace through Indian Philosophy: A Civilizational Approach to International Relations." ResearchGate, Sept. 2024. [5]

Gupta, A., and A. Mitra, eds. Vasudhaiva Kutumbakam: Relevance of India's Ancient Thinking to Contemporary Strategic Reality. New Delhi: Aryan Books International, 2020. [17]

Kant, Immanuel. Perpetual Peace: A Philosophical Essay. 1795. Ed. Campbell Smith. London: George Allen & Unwin, 1903. [1]

Kapoor, R. "The Philosophy of Vasudhaiva Kutumbakam: A Path to Tranquility in Times of Turbulence." Journal of Contemporary Politics 3.2 (2024): 65-70. [6]

Kuhlmann, Katrin. "The Need for a 'Micro' Approach to International Law." Stanford Journal of International Law 61.1 (2025): 5-28. [10]

Panda, Jagannath. "'Vasudhaiva Kutumbakam' to 'Vishwa Guru': India's Shrewd Management of (In)security in Indo-Pacific." International Relations of the Asia-Pacific 26.1 (2026): lcaf014.

Shringla, Harsh Vardhan. "India's G20 Presidency: The Global Impact of Vasudhaiva Kutumbakam." Journal of Political Science 7.1 (2023): 133-145. [12]

Tharoor, Shashi. Pax Indica: India and the World of the 21st Century. New Delhi: Penguin Books, 2012. [15]

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

Works cited

The Philosophy of Vasudhaiva Kutumbakam: A Path to Tranquility in Times of Turbulence, accessed January 20, 2026, https://jcp.bujournals.com/articles/the-philosophy-of-vasudhaiva-kutumbakam-a-path-to-tranquility-in-times-of-turbulence

Full text of "The Principal Upanishads By S Radhakrishnan" - Internet Archive, accessed January 20, 2026, https://archive.org/stream/129481965theprincipalupanishadsbysradhakrishnan/129481965-The-Principal-Upanishads-by-S-Radhakrishnan_djvu.txt

Vasudhaiva Kutumbakam - Wikipedia, accessed January 20, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Vasudhaiva_Kutumbakam

The concept of Vasudhaiva Kutumbakam (The World is a Family): Insights from the Mahopanisad, accessed January 20, 2026, https://sanskritarticle.com/wp-content/uploads/13-49-Arun.Kumar_.Kar_.pdf

Rethinking Global Peace through Indian Philosophy ... - ResearchGate, accessed January 20, 2026, https://www.researchgate.net/publication/394940068_Rethinking_Global_Peace_through_Indian_Philosophy_A_Civilizational_Approach_to_International_Relations

(PDF) From Ahiṃsā To Vasudhaiva Kutumbakam: The Indian Knowledge System as a Blueprint for Sustainable Peace - ResearchGate, accessed January 20, 2026, https://www.researchgate.net/publication/394318761_From_Ahimsa_To_Vasudhaiva_Kutumbakam_The_Indian_Knowledge_System_as_a_Blueprint_for_Sustainable_Peace

Maha Upanishad - Wikipedia, accessed January 20, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Maha_Upanishad